सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से संबद्ध)

33, प्रभांजलि, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती

महासचिव : का. डी. आर. महापात्र

परिपत्र विशेष

दिनांक : 06/01/2018

प्रिय साथियों ,

एक विलक्षण योद्धा का अवसान

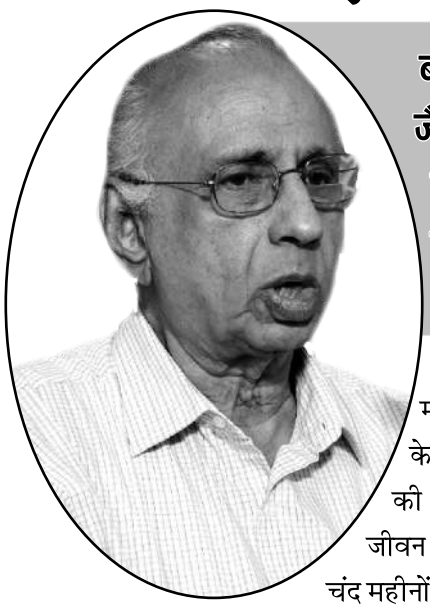

बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसे तो न थी
जैसी अब है तेरी महफिल कभी ऐसी तो न थी
ले गया छीन के कौन तेरा सब्र-ओ-करार
बे-करारी तुझे ऐ दिल कभी ऐसी तो न थी

- बहादुर शाह ज़फर

बीमा कर्मियों के महान संगठन एआईआईईए के 67 वर्षों के सफर में 19 वर्ष की यौवन अवस्था में भारतीय जीवन बीमा निगम के निर्माण के चंद महीनों बाद 1957 में प्रथम बैच में ही सहायक के रूप में निगम में भर्ती हुए काम. एन.एम. सुन्दरम का विगत 60 सालों तक विभिन्न भूमिकाओं में एआईआईईए के साथ जुड़ाव ही नहीं रहा, आज के एआईआईईए को गढ़ने में अप्रतिम योगदान रहा। इसलिए जब 26 दिसंबर को 8:30 बजे हृदयाघात से काम. सुन्दरम के निधन का समाचार मिला तो हममें से अनेको के लिये यह यकीन करना ही मुमकिन नहीं था। समूचे देश के बीमाकर्मी ही नहीं मेहनतकश आंदोलन से जुड़े प्रत्येक साथी के लिये यह खबर किसी वज्रघात से कम नहीं था।

एक ट्रेड यूनियन नेता, एक प्यारे साथी, एक अर्थशास्त्री, एक समाज परिवर्तन के संघर्ष के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ क्रांतिकारी अनेकानेक रूपों में हमने उन्हें देखा। कला, साहित्य, खेल, अर्थशास्त्र समाज के हर हिस्से से जुड़े विषयों पर उनकी पारंगता की वानगी अद्भुत व बेमिसाल थी। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। निगम की सेवाओं में आने के बाद 1961 में साउथ जोन के सहसचिव, फिर दो साल बाद ही 25 वर्ष की उम्र में उस दौरान निगम के कर्नाटक, तमिलनाडू, आंध्र प्रदेश, व केरल जैसे भूभाग को समेटे, एआईआईईए की सबसे बड़ी क्षेत्रीय इकाई साउथ जोन के महासचिव का दायित्व उन्होंने स्वीकार किया। वे वर्ष 1970 से एआईआईईए की वार्ता समिति के सदस्य रहे। बीमा कर्मचारियों के आंदोलन के इतिहास में आटोमेशन, लॉक आउट जैसे, तो देश के जनवादी आंदोलन के इतिहास में आपातकाल के काले दिनों में जब मजदूर वर्ग और आम जनता से सारे जनतांत्रिक अधिकार छीन लिये गये थे उस कठिन दौर में इन राजनैतिक परिस्थिति के मुकाबले के साथ ही एआईआईईए को तोड़ने की कोशिशों के खिलाफ सांगठनिक एकता के हिफाजत के संघर्ष, दोनों ही मोर्चों पर संघर्ष के साथ ही बीमा कर्मचारियों के बेहतर जीवन हासिल करने के संघर्ष की चुनौती को स्वीकार करते हुये आगे बढ़ने का साहस कोई आसान डगर नहीं थी, लेकिन एआईआईईए और काम. सुन्दरम जैसे नेतृत्वकर्ताओं ने हर चुनौती को पराजित करते हुये एआईआईईए के संघर्षों और उपलब्धियों के नये इतिहासों को गढ़ा। इसलिये जब 1988 में एआईआईईए के जयपुर सम्मेलन में 29 साल तक एआईआईईए के महासचिव रहे का. सरोज चौधरी को इस जिम्मेदारी से मुक्त करने का निर्णय लिया गया तो निर्विवाद रूप से का. सरोज के विकल्प के रूप में एआईआईईए ने सर्वसम्मति से का.एन.एम. सुन्दरम को नया महासचिव चुना।

उनके इस दायित्व को लेने के बाद ही नब्बे के दशक की साम्राज्यवादी नवउदारवादी नीतियों की आड़ में दुनिया के श्रमिक वर्ग से सब कुछ छीनकर सार्वजनिक संपत्ति के निजी संपत्ति में हस्तांतरण की उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण की आक्रामक मजदूर विरोधी नीतियाँ को दौर शुरू हुआ। राष्ट्रीयकृत बीमा उद्योग को नेस्तनाबूत करते हुए एलआईसी - जीआईसी को निजी कंपनी के रूप में तब्दील करने के शासक वर्ग के क्रूर हमलों के खिलाफ बीमा कर्मियों से ''सीट से लेकर सड़क तक'' संघर्ष के नारे तले लामबंद कर, निजीकरण विरोधी संघर्ष को, जनता के राजनैतिक संघर्ष के रूप तब्दील करने के व्यापक जन अभियान की मुहिम, अनगिनत प्रचार साम्रगी से लैस अकाट्य तर्क के साथ पुस्तिकाओं की श्रृंखला के साथ, हर कार्यकर्ता को मैदान में उतारना, हर धारा की राजनीति तक अपने विचार पहुंचाना, उसमें पूरे संगठन को जुटाना, डेढ़ करोड़ हस्ताक्षर युक्त जनयाचिका एकत्र करने का

महाअभियान, देश के ट्रेड यूनियन आंदोलन के साथ ही देश की शासक पार्टियों ने भी इसका लोहा माना और यही कारण है कि आज भी एलआईसी – जीआईसी जैसी राष्ट्रीयकृत संस्था कायम है।

पेंशन आंदोलन हो या वेतन पुनर्निर्धारण के संघर्ष, तर्क शक्ति का सवाल हो या बेहतरीन कौशल का का. सुंदरम को बेहतर शिल्पकार की ही संज्ञा दी जा सकती है। लेकिन उन्होंने हमेशा कहा ''फायदे केवल तर्कों से नहीं संगठन की ताकत से मिलते हैं।'' याने संगठन की महत्ता को ही उन्होंने प्रतिस्थापित किया। एआईआईईए का विकास और साथ ही का.सुंदरम के व्यक्तित्व का विकास एक दूसरे के मानो पूरक है। सी.जेड.आई.ई.ए. के वर्ष 1992 में मध्यक्षेत्रीय एलआईसी की इकाई के जन्म के बाद हुये गठन से लेकर उसके विकास में भी उनका अप्रतिम योगदान है। वे शहडोल, सतना जैसे नये मंडलों के निर्माण के बाद उनकी शाखा इकाईयों तक की सभा में शिरकत किये। मध्य क्षेत्र की लगभग सभी मंडलीय इकाई में वे दौरा किये। हिन्दी में बोलने में दिक्कतों के बावजूद मध्य क्षेत्र के साथियों की मांग पर, जो वादा उन्होंने किया उसे निभाया भी । शहडोल के सीजेडआईईए सम्मेलन में उन्होंने प्रतिनिधि सत्र मे हिन्दी में धाराप्रवाह उद्बोधन दिया। यह उनके संगठन के प्रति अगाध समर्पण को प्रदर्शित करता है।

जन कवि नागार्जुन ने कहा था –

नये गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें, भीनी भीनी खूशबू वाले
रंग-बिरंगे,यह जो इतने फूल खिले हैं
कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था
पकी सुनहरी फसलों से जो , अब की यह खलिहान भर गया
मेरी रग-रग के शोणित की बूंदे इसमें मुसकाती हैं
नये गगन में नया सूर्य जो चहक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है, मेरी भी आभा है इसमें।

साल 2003 में एआईआईईए के रायपुर सम्मेलन में वे महासचिव पद से निवृत्त होकर अध्यक्ष बने। 2007 में वे इस पद से निवृत्त होने के बाद भी एआईआईईए में अंतिम समय तक सक्रिय रहे। रायपुर के एआईआईईए सम्मेलन से ही ''भारत के लिये लोग मंच'' (People for India) के निर्माण का आव्हान किया गया, यह आव्हान महासचिव के रूप में अपने अंतिम समापन भाषण में का.एन.एम.एस. ने ही किया था। इस मंच की अवधारणा के पीछे उनका यह सपना ही था कि, यह समाज शोषण पर आधारित समाज है, इसे उखाड़कर शोषणहीन समाज के निर्माण के बिना इंसान द्वारा इंसान के शोषण और जाति, धर्म, भाषा, प्रांत, लिंग के आधार पर इंसान से एक इंसान को अलग करने की राजनीति को पराजित नहीं किया जा सकता। वे मेहनतकशों की वर्गीय विचारधारा के प्रति न केवल अंतिम समय तक प्रतिबद्ध थे बल्कि वे मेहनतकशों की अंतिम विजय पर विश्वास खोने को कायरता समझते थे। इसलिए वे कहा करते थे कि एआईआईईए में हम सब एक हैं, हमारी पहचान एक , धर्म-जाति-भाषा एक है, हम सभी साथी हैं, हम मजदूर हैं हम बीमा कर्मचारी हैं। एआईआईईए को अगर देश में रूपांतरित कर दिया जाये तो हमारे क्रांतिकारियों के सपने का भारत हम बना सकते हैं। यही एआईआईईए का भी सपना है। भौतिक रूप से का. सुंदरम हमारे बीच नहीं रहे लेकिन, काम. सुंदरम का सपना, उनके विचार, उनका पथ, आज भी हमारे सामने है। इसलिये, का. सुंदरम जैसे लोग मरा नहीं करते। वे जिंदा रहेंगे, हमारे हर संघर्ष में, वे जिंदा रहेंगे – हमारे दिलों-दिमाग में। आज की मौजूदा चुनौती के दौर में उनका असामयिक ढंग से हमसे बिछड़ना हमारे लिये किसी त्रासदी से कम नहीं है, उनके चले जाने के बाद रिक्त स्थान की भरपाई भी नामुमकिन है। इसलिये, आज हमें यह शपथ लेनी होगी कि, हम उनके बताये रास्ते पर चलेंगे, उनके सपनों को मंजिल तक पहुंचाने के सफर के एक राही बनेंगे, उनके अप्रतिम योगदान से निर्मित वटवृक्ष एआईआईईए के हर पत्ते की हिफाजत कर, अपना सर्वोच्च योगदान देकर, एआईआईईए को हर स्थिति का मुकाबला करने निरंतर रूप से मजबूत बनायेंगे, यही उन्हें हमारी सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी।

मशहूर शायर अहमद फराज के शब्दों में

हुआ है तुझ से बिछड़ने के बाद हमें मालूम
कि तू नहीं था तेरे साथ एक दुनिया थी।

सीजेडआईईए अपने प्रिय नेता व साथी का. एन.एम.सुंदरम की स्मृतियॉ को सलाम करते हुये अपना लाल झंडा उनके सम्मान में झुकाता है। हम उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते है। का. पुनिता सुंदरम उनके पुत्र राजा, आनंद सभी परिजन को हम सभी बीमाकर्मी अपनी गहरी संवेदना प्रेषित करते है। ये हमारा वादा है , फैज के शब्दों में

हम परवरिश-ए-लौह-ओ-कलम करते रहेंगे
जो दिल में गुजरती है रकम करते रहेंगे।
(प्रेरणा, इंकलाब, अभिव्यक्त)

का.एन.एम.सुंदरम को लाल सलाम।
का.एन.एम.सुंदरम अमर रहें।
का.एन.एम.सुंदरम के अरमानों को मंजिल तक पहुचायेंगे।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ.

आपका साथी

(डी.आर. महापात्र)
महासचिव